E-Content

Master of Arts (History)

Darbhanga House, Patna University, Patna-800005

Semester-II

Course Code-CC-VI

Course Name: (History of Europe & Modern World 1919-2000)

Unit-IV

तुष्टीकरण और द्वितीय विश्वयुद्ध

अविनाश कुमार

सहायक प्रोफेसर -इतिहास

पटना कॉलेज, पटना

6202393206 & avinashisavailable@gmail.com

- विश्व इतिहास में तुष्टीकरण की नीति को द्वितीय विश्वयुद्ध के एक कारण के रूप में देखने की परंपरा रही है। इस नीति के आलंबन ने सामुदायिक सुरक्षा की भावना को जबर्दस्त नुकसान पहुंचाया था। जब लोगों या देशों के समूह दो ऐसे भागों में बंट जाते हैं जिनमें एक शांति के लिए हद से आगे तक झुकने को तैयार हो जाते हैं और दूसरा समूह पहले समूह की इस मजबूरी का फायदा उठाता है और अपनी अनाप-शनाप मांगों की अनंतिम फेहरिस्त पेश कर देता है।
- ऐसा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, बौद्धिक और धार्मिक-जीवन के हर पहलू में देखने को मिल सकता है।
- द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में इसके कई चरण रहे-क्षेत्रीय पहलू के तौर पर ऑस्ट्रिया का अधिग्रहण पहला कदम था, सुडेटनलैंड की नाजायज मांग इसका अगला कदम था, चेकोस्लोवाकिया इसी क्रम में आगे आया। पोलैंड पर आक्रमण चेकोस्लोवाकिया के अधिग्रहण की स्वाभाविक परिणति थी क्योंकि हिटलर की अतिरिक्त भूमि की भूख उधर से ही पूरी होनी थी।

- येल इतिहासकार पाल केनेडी ने तुष्टीकरण की परिभाषा “ झगड़ों को निपटाने के एक रास्ते के रूप में की है जहाँ लोगों को तार्किक बातचीत और समझौते के द्वारा शिकायतों को सन्तुष्ट कर मंहगे, खून खराबे युक्त और सम्भवत: काफी भयानक सशस्त्र संघर्ष को बचाया जाता है।’’

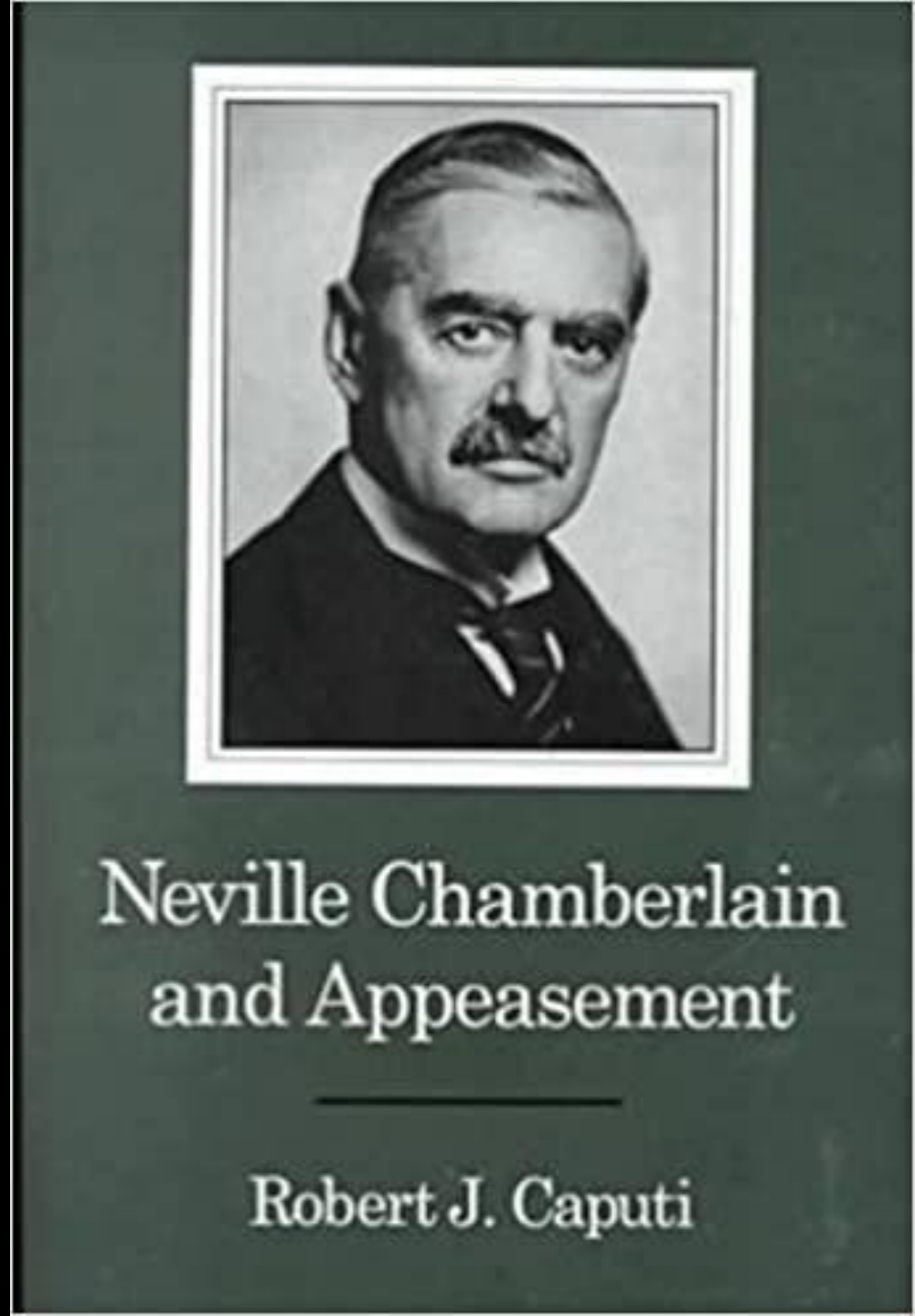

- प्रथम विश्वयुद्ध के बाद पेरिस में शांति-सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस संधि में यूं तो विश्व के कई कई देशों के प्रतिनिधि (बीकानेर के महाराज गंगा सिह भी)शामिल हुए थे, परंतु सब देशों का महत्त्व बराबर नहीं था। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लॉयड जॉर्ज, अमरीकी राष्ट्रपति विल्सन, फ्रांसीसी प्रधानमंत्री क्लीमेंशू, इतालवी प्रधानमंत्री ऑरलैंडो, जापानी विदेशमंत्री मैकिनो-ये पाँच अति महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व थे। इन लोगों ने मिलकर शांति सम्मेलन को मूर्त रूप दिया। लेकिन इन सभी लोगों के उद्देश्यों में भारी विरोधाभास मौजूद था। फ्रांस को अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा की चिता सता रही थी तो ब्रिटेन रूसी क्रान्ति के बाद साम्यवाद के बढ़ते खतरे से बेहद परेशान था।

- अमरीकी संसद प्रत्यक्षत: किसी तरह के यूरोपीय युद्ध में अपने को फँसाने के सख्त खिलाफ था। जापान की नजर अपने कमजोर पड़ोसियों पर थी। इटली उत्तरी अफ्रीका और फ्यूम पर नजर गड़ाए हुए था। फिर सामने से वे अपने आपको इकट्ठा दीखाना चाहते थे। लेकिन शांति सम्मेलन निबट जाने के बाद सब के विरोधाबहस सामने आ गए। कांग्रेस ने अमरीका को राष्ट्र संघ का सदस्य बनने की मंजूरी नहीं दी। मात्र 3 वर्षों बाद मुसोलिनी के अभ्युदय से इटली भी अपनी राह पर चला गया। जापान का लेना-देना सिर्फ चीन से रह गया था। बचे सिर्फ ब्रिटेन और फ्रांस-जिन पर सारा दारोमदार था इस संधि को बचाने का।

- फ्रांस ने वर्साय की संधि की शर्तों को बेहद कठोर बना दिया था। अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा की चिंता के आधार पर जर्मनी के साथ की गई ज्यादती की वह वकालत करता रहा। पर क्या ब्रिटेन भी जर्मनी के बारे में ऐसा ही ख्याल रखता था? इसका उत्तर था-बिलकुल नहीं! मुख्य भूमि यूरोप में सत्ता-संघर्ष जर्मनी और फ्रांस के बीच था। इसलिए जैसे-जैसे जर्मनी कमजोर होता जाता, वैसे-वैसे फ्रांस मजबूत होता जाता। अगर मजबूत जर्मनी प्रथम विश्वयुद्ध में ब्रिटेन के लिए खतरा बना था तो उसके पहले का इतिहास बताता है कि जब-जब फ्रांस मजबूत हुआ, उसने ब्रिटेन के लिए मुश्किलें खड़ी कीं। नेपोलियन ने तो ब्रिटेन की नाकेबंदी तक कर दी थी।

- इसलिए पराजित जर्मनी के प्रति ब्रिटेन का वैसा नजरिया नहीं था, जैसा नजरिया फ्रांस का था। साथ ही, उस समय तक विश्व की सबसे बड़ी साम्राज्यवादी ताकत ब्रिटेन था, जो चाहता था कि जर्मनी सिर्फ नौसैनिक शक्ति का विस्तार न करे, जर्मनी की बाकी कोशिशों से उसका ज्यादा सरोकार नहीं था। वह पश्चिमी यूरोप में साम्यवाद के प्रसार के खिलाफ जर्मनी को एक ढाल के रूप में इस्तेमाल की संभावना तलाश रहा था।
- सिर्फ जर्मनी ही नहीं , अन्य देशों के साथ भी इसी तरह का रवैया अपनाया गया। जैसे इटली और जापान के साथ।

• इटली के साथ ब्रिटेन की तुष्टीकरण की नीति

- ब्रिटेन अपने विश्वव्यापी साम्राज्य, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को कायम रखने के लिए भूमध्य सागर के क्षेत्र एवं सुदूर पूर्व को भी खतरों से सुरक्षित रखना चाहता था। जो इटली के सहायता के बिना अत्यंत कठिन कार्य था।इसलिए ब्रिटेन ने अफ्रीका में इटली के विस्तार को प्रोत्साहित किया तथा जब मुसोलिनी ने इथिथोपिया पर हमला कर उस पर नियंत्रण स्थापित कर लिया तो ब्रिटेन ने इसे नजरअंदाज कर दिया। ब्रिटेन ने लीग ऑफ नेशन द्वारा इटली पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों का पूर्ण रूप से पालन नहीं होने दिया।

जापान के साथ तुष्टिकरण

इंग्लैंड सुदूर और दक्षिण पूर्व एशिया में अपने व्यापारिक हितों की रक्षा के लिए जापान से दुश्मनी नहीं लेना चाहता था।

इसलिए इंग्लैंड ने मंचूरिया संकट से लेकर चीन-जापान युद्ध की घटनाओं को नजरअंदाज किया।

- पेरिस शांति सम्मेलन के कुछ वर्षों बाद ही ब्रिटेन के जर्मनी के प्रति झुकाव से फ्रांस को रोष होना शुरू हो गया था। ब्रिटेन के इस बदले-बदले रूख से फ्रांस अजीब पेशोपेश में पड़ गया। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि युद्ध में तो वह फ्रांस के साथ रहा, युद्ध समाप्त होने पर वह जर्मनी की तरफदारी क्यों करने लगा? **इस अजीब स्थिति को उस समय के किसी इतिहासकार ने बड़ी सटीक उपमा के साथ बताया था: ब्रिटेन और फ्रांस उस वृद्ध दंपत्ति की तरह थे, जो झगड़ते तो रहते हैं पर कभी जुदा नहीं हो सकते हैं।**" इसी का नतीजा था कि एक दिन खुद फ्रांस ब्रिटेन की बातों में आ गया और **तुष्टीकरण की नीति का आलम ये रहा कि म्यूनिख समझौते में खुद फ्रांस ने हिटलर की नाजायज मांगों को मान लिया।**

ऑस्ट्रिया का अधिग्रहण:

- बिस्मार्क के नेतृत्व में जर्मनी के एकीकरण से पूर्व जर्मन राज्यों पर ऑस्ट्रिया का नियंत्रण हुआ करता था। ऑस्ट्रिया का राजा हैबसबर्ग वंश का प्रतिनिधि था जिसका संबंध शार्लमान से था जो कभी पवित्र रोमन साम्राज्य का सम्राट हुआ करता था। महारानी मारिया थेरेसा और चांसलर मेटरनिख के समय पूरे यूरोप में ऑस्ट्रिया का बोल-बाला था। लेकिन प्रशा के हाथों हार (1866) के बाद उसकी स्थिति में लगातार गिरावट आती गई। प्रथम विश्वयुद्ध तो उसी के राजकुमार की हत्या का बदला लेने के लिए शुरू किया गया था।

- हिटलर ने जिस लेबेनस्रम का पालन किया, उसमें एक जर्मनभाषी राष्ट्र का वो भी जर्मनी की सीमा पर अलग रहना नानुमकिन था। जन्मजात हिटलर ऑस्ट्रियन ही था। लेकिन पेरिस शांति सम्मेलन के शक्ति-संतुलन के सिद्धान्त की वजह से वह प्रत्यक्ष रूप से ऑस्ट्रिया को जर्मनी में नहीं मिला सकता था। इसके लिए स्थितियाँ बनाने की शुरुआत हिटलर ने चांसलर बनने के साथ शुरू कर दी थी। ऑस्ट्रिया और जर्मनी के बीच ब्रेनर दर्रा था जहां पर इतालवी सेना तैनात थी। मुसोलिनी सिद्धांतत: उसका दोस्त था। इसलिए कोई दिक्कत होनेवाली नहीं थी। अब काम बाकी था-हिटलर के कदम उठाने पर विरोध करनेवाले ब्रिटेन और फ्रांस के रूख को जानने की। यह मौका स्पेनिश गृह-युद्ध के समय मिला जब युद्ध से भागने और डरने की फ्रांस और ब्रिटेन की कमजोरी का पता चल गया।

ऑस्ट्रिया के अधिग्रहण के बाद जब हिटलर अपने जन्मस्थान पहुंचा तो उसका लोगों ने भव्य स्वागत किया।

When they make fun of you for not being German so you just make it part of Germany

- तीसरा काम बाकी था -ऑस्ट्रिया के अंदर एक समानान्तर विरोधी खेमा तैयार करना जो सरकार के सामने ऐसी मांग रखे जिसे वो पूरा करने में असमर्थ हो। इसके लिए वहाँ नाजी दल बनाया गया, जिसका नेता इंक्वार्ट था। अपने सरकारी आवास पर हिटलर ने एक बार ऑस्ट्रियन चांसलर शुशनिग को बूलाककर इंक्वार्ट को अपने मंत्रिमंडल में रखने को बाध्य किया। शुशनिग ने ऐसा किया भी, लेकिन गत्यावरोध लगातार बढ़ते जाने से अंतत: उसने त्यागपत्र दे दिया। ऐसे में इंक्वार्ट वहाँ का चांसलर बना और उसने औपचारिक रूप से जर्मनी को ऑस्ट्रिया में अपनी सेना भेजने का निमंत्रण दिया। खून का एक कतरा बहाये हिटलर ने ऑस्ट्रिया को जर्मनी में मिला लिया और पूरी दुनिया यह नंगा नाच खामोश होकर देखती रही।

अपनी फौज को ऑस्ट्रिया (मातृदेश –जन्मभूमि) रवाना करता हुआ हिटलर

- इस अधिग्रहण पर ब्रिटिश प्रधानमंत्री चेम्बरलेन ने संसद में चेताया था, “हमें और अन्य छोटे राष्ट्रों को इस मुगालते में नहीं रहना चाहिए कि युद्ध के समय राष्ट्रसंघ हमें बचाने आयेगा।” इससे और आगे बढ़ते हुए चर्चिल ने भी चेताया था, “ वियना पर जर्मनों के प्रभुत्व के कारण नाजियों के लिए दक्षिण-पूर्व यूरोप खुल गया है। ” भावी घटनाओं से इस बात को सच साबित कर दिया। ऑस्ट्रिया पर कब्जा सिर्फ एक देश को मिलाना नहीं था, इससे हिटलर के अगले कदम को दशा और दिशा मिल गई।

ऑस्ट्रिया की संसद को संबोधित करता हुआ हिटलर-उसके प्रचार का ऐसा जादू चला कि पवित्र रोमन साम्राज्य की विरासत वाले ऑस्ट्रिया पर आक्रमण के बावजूद वहाँ पर उसका मसीहा की तरह स्वागत हुआ।

म्यूनिख समझौता:

- पेरिस शांति सम्मेलन के बाद यूरोप में कई देशों का अस्तित्व सामने आया, चेकोस्लोवाकिया उनमें से एक था। यद्यपि इसकी अधिकांश आबादी स्लाव और चेक थी, पर तीनों ओर ऑस्ट्रिया और जर्मनी से घिरे होने की वजह से सीमांत प्रदेशों में जर्मनभाषियों की काफी तादाद थी। अपनी विस्तारवादी योजना के तहत जब हिटलर ने लेबेन्श्रम को उछाला जिसके तहत यूरोप के सभी जर्मनभाषी क्षेत्रों को एक शासन-सूत्र में पिरोना था तो चेकोस्लोवाकिया के लिए एक असहज स्थिति पैदा हो गई। लेबेन्श्रम के तहत पहले हिटलर ने ऑस्ट्रिया को मिला लिया। इसने चेकोस्लोवाकिया को स्वाभाविक रूप से अगला निशाना बना दिया। हिटलर की उसके प्रति मंशा पहले से ही साफ थी और वहाँ अपने हस्तक्षेप की संभावना पैदा करने के लिए उसने वहाँ नाजी पार्टी का संगठन खड़ा करवा दिया। हेनलिन उसका नेता था।

- हिटलर की शह पर उसने चेक सरकार के आगे ऐसी मांगे रखी जिन्हें उसके लिए मानना असंभव था। इस गत्यावरोध को मुनासिब मोड देने के लिए हिटलर ने ब्रिटेन, फ्रांस और इटली को अपनी तरफ मिलाया। ब्रिटेन पहले ही जर्मनी के प्रति सहानुभूति रखने लगा था। अपनी चिरशाश्वत तुष्टीकरण की नीति के अनुरूप ब्रिटेन के दबाब में फ्रांस और इटली ने म्यूनिख समझौते पर हामी भारी। म्यूनिख समझौते में जर्मनी को यह छूट दी गई थी कि वह सडेन्टेलैंड को अपने में मिला दे। सडेन्टेलैंड उस समय चेकोस्लोवाकिया के अन्दर आता था।इस समझौते पर जर्मनी, फ़्रांस, इटली और ग्रेट ब्रिटेन ने सितम्बर 29-30, 1938 को हस्ताक्षर किये थे। अतः इस समझौते में उसको भी शामिल करना चाहिए था, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। आगे चलकर चेकोस्लोवाकिया को यह समझौता स्वीकार करना पड़ा क्योंकि इसके लिए उसके सैन्य गठजोड़ वाले मित्र देश ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस दबाव डाल रहे थे।

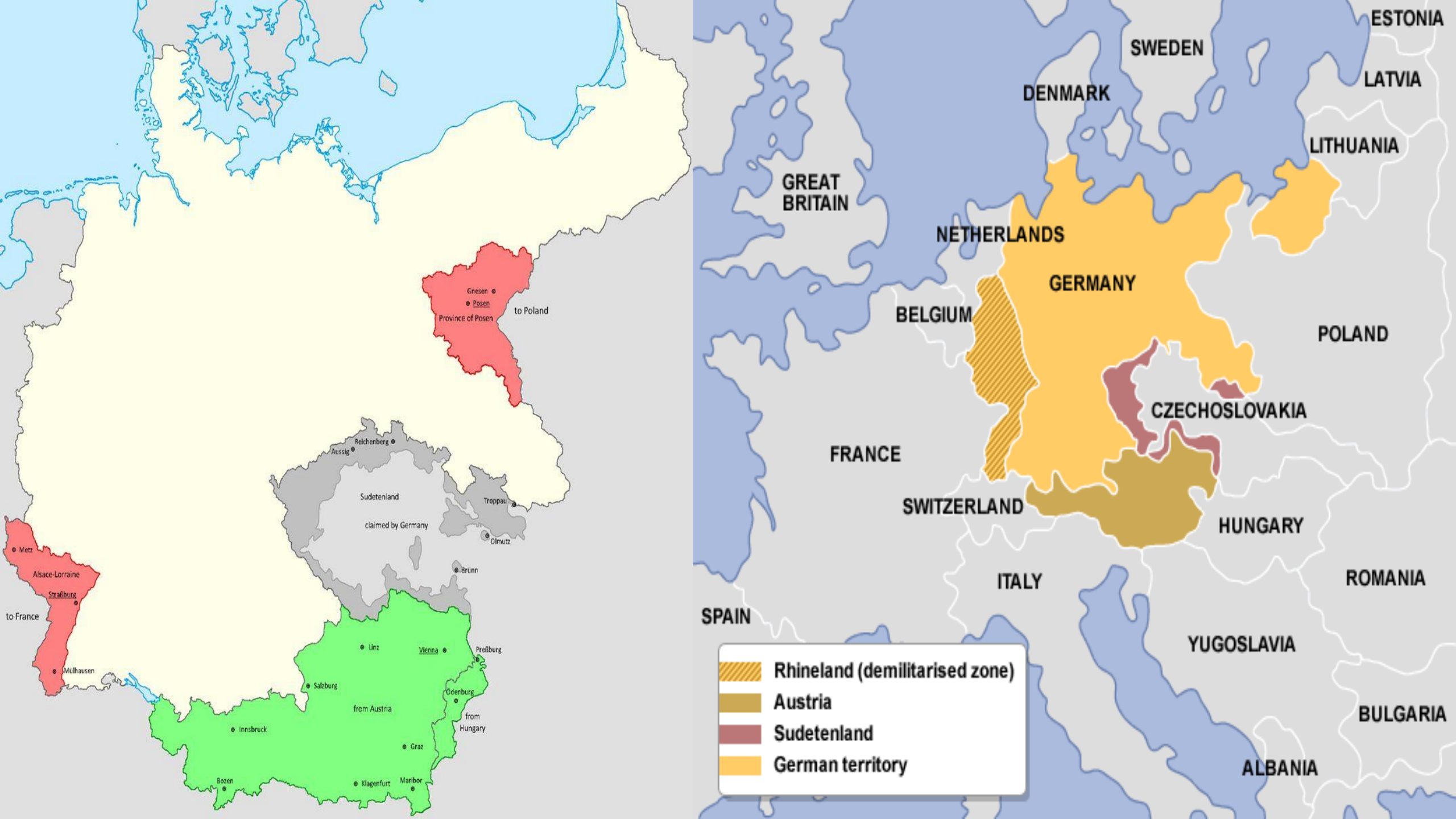
Gnesen
Posen
Province of Posen
to Poland
Reichenberg
Aussig
Sudetenland
claimed by Germany
Troppau
Olmutz
Brünn
Metz
Alsace-Lorraine
Straßburg
to France
Mülhausen
Linz
Vienna
Preßburg
Salzburg
Ödenburg
from Austria
from Hungary
Innsbruck
Graz
Bozen
Klagenfurt
Maribor
ESTONIA
SWEDEN
LATVIA
DENMARK
LITHUANIA
GREAT BRITAIN
NETHERLANDS
GERMANY
BELGIUM
POLAND
CZECHOSLOVAKIA
FRANCE
SWITZERLAND
HUNGARY
ITALY
ROMANIA
SPAIN
YUGOSLAVIA
BULGARIA
ALBANIA
Rhineland (demilitarised zone)
Austria
Sudetenland
German territory

What is Chamberlain trying to do?

What can we infer about Hitler's actions?

Source: David Low, *Evening Standard*, July 8, 1936 (adapted)

इन दोनों कार्टूनों में देखा जा सकता है कि ब्रिटिश प्रधानमंत्री शांति के कठिन डगर पर चलते जा रहे हैं और इस मजबूरी का फायदा उठाते हुए हिटलर अपनी बुलंदियों की सीढ़ी चढ़ता रहा।

- यह अधिग्रहण 1938 के अक्टूबर 1-10 के बीच चार चरणों में किया जाना था। कुछ क्षेत्रों का अधिग्रहण जनमत संग्रह के बाद ही होना था।चेकोस्लोवाकिया से यह अपेक्षा की गई थी कि वह अपनी सेना और पुलिस में कार्यरत सुडेटेन जर्मनों (यदि वे ऐसा चाहें) और सभी सडेटेन जर्मन बंदियों को म्यूनिक समझौता होने के चार सप्ताह के अन्दर मुक्त कर दे। लेकिन अधीर हिटलर के लिए संयम का कोई महत्त्व नहीं था। उसकी क्षेत्रीय आकांक्षाएँ ऑस्ट्रिया को मिलाने के बाद बढ़ गई थी और वह यथाशीघ्र चेकोस्लोवाकिया को हड़पना चाहता था। म्यूनिख समझौते का आधा वर्ष भी नहीं हुआ था कि हिटलर अपने वचनों से मुकर गया और पूरे चेकोस्लोवाकिया पर आक्रमण कर दिया। यहीं से द्वितीय विश्व युद्ध का सूत्रपात हो गया।

ब्रिटेन और फ्रांस की युद्ध से भागने की नीति – हिटलर के लिए ऐसा था जैसे उसनेदुश्मन की कमजोर नब्ज पकड़ ली हो। इसके बाद उसका भरोसा बढ़ता गया कि क्रमिक रूप से अपनी हर मांग को वह मनवा सकता था। अपनी हर मांग को शुरुआत में वह अपनी अंतिम मांग कहता और उसके पूरे होने के बाद वह तत्काल अगली मांग को अपनी अंतिम मांग कहकर सामने रख देता था। चेकोस्लोवाकिया या सुडेटनलैंड की मांग भी इसी शृंखला की एक कड़ी मात्र थी।

सितंबर 1938 में म्यूनिख संजहुते पर सहमति के बाद क्रमश: चेम्बरलेन(ब्रिटेन), दलादिए(फ्रांस), हिटलर(जर्मनी) और मुसोलिनी(इटली)

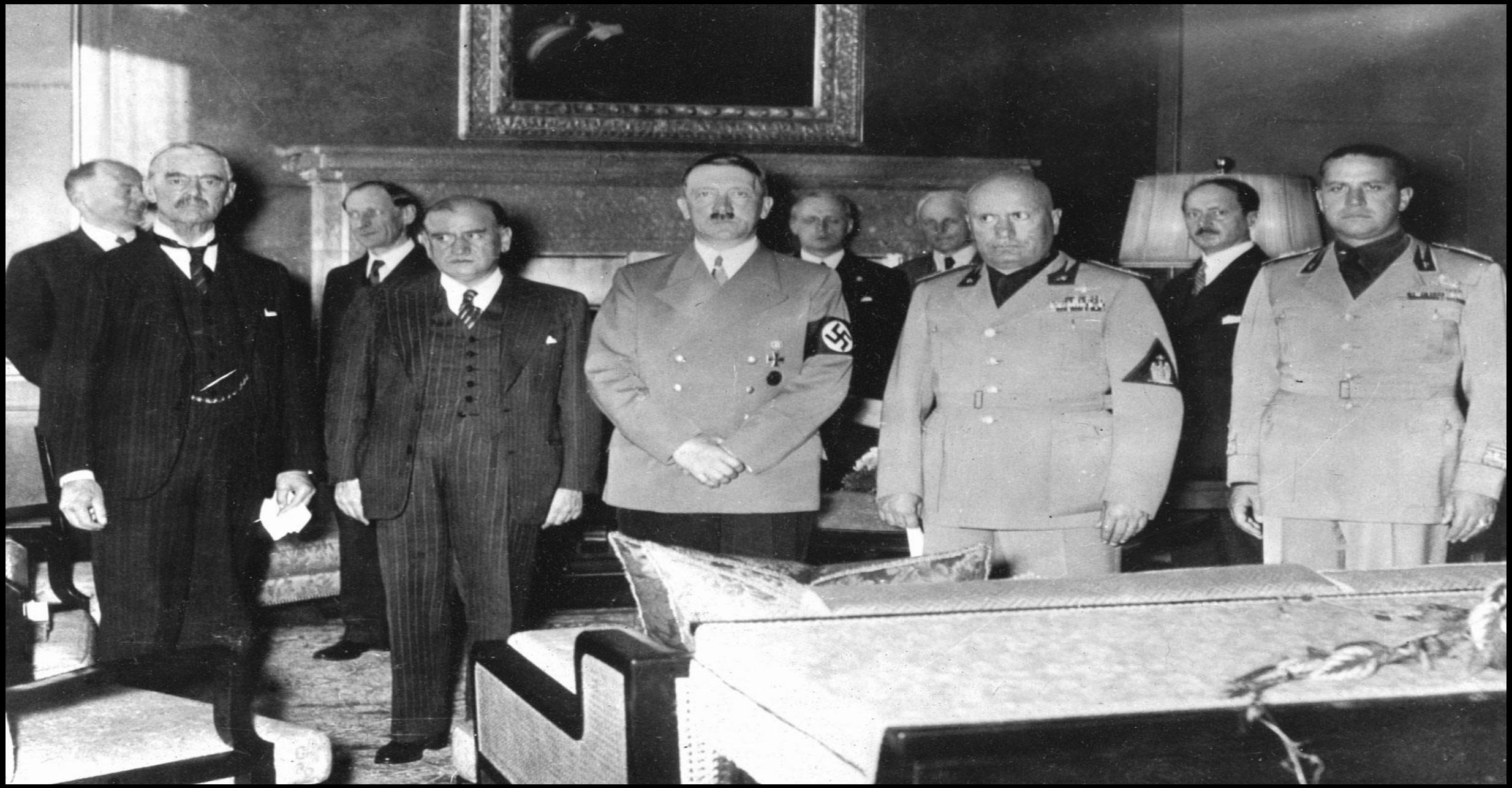

हिटलर से मिलने जाने से पहले उसने यूरोप और अपने देश को शांति लाने का भरोसा दिया और म्यूनिख समझौते से लौटकर उसने यकीन दिलाया कि उसने अमन का मुकम्मल इंतजाम कर लिया है।

- स्पष्टत: म्यूनिख समझौता एक तुष्टिकरण की कार्रवाई थी जिसका लाभ एडोल्फ हिटलर ने अपनी साम्राज्यवादी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए उठा लिया। इससे इस सच्चाई का पता चलता है कि किसी भी विस्तारवादी तानाशाही को किसी तुष्टिकरण के द्वारा संभाला नहीं जा सकता है। ***बेहद सामान्य रूप में कहा जाय तो हिटलर जैसे तानाशाह की हर मांग को उसकी अंतिम मांग मानने की बात उस खुशफहमी जैसी थी जिसमें एक कुत्ते से उम्मीद की जाती है कि 10 दिनों तक लगातार भरपेट गोश्त खाने के बाद 11वें दिन वह शाकाहारी हो जाएगा।***

- म्यूनिख समझौता एक ऐसी परिघटना थी जिस पर गांधी जी ने भी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। चेकोस्लोवाकिया के साथ हुए धोखे और ब्रिटेन की घृतराष्ट्रवादी नीति पर गांधी जी ने कहा था, “एक दिन की खुशी के लिए यूरोप ने अपनी शाश्वत शांति खो दी। ” इतना ही नहीं समझौते के दस्तावेज़ को दिखाते हुए हीथ्रो हवाई अड्डे से उतरने के बाद नेविल चेम्बरलेन ने कहा, ***“मैंने अपने देश के लिए शांति स्थापित कर ली है।”*** चेकोस्लोवाकिया के मानचित्र को दिखाते हुए उसने संसद में कहा था, “चारों तरह जर्मनी के जबड़े में घिरे चेकोस्लोवाकिया को बचाना नानुमकिन था। एक दूर देश जिसके लोगों से हमारा कोई लेना-देना नहीं , उसकी रक्षा के लिए युद्ध में जाना कोई सही फैसला नहीं होता।”

- ब्रिटेन जैसे दुनिया पर राज करनेवाले देश के प्रधानमंत्री का ऐसा बचकाना बयान एकबारगी अविश्वासनीय लगता है। लेकिन या सच्चाई थी। उस समय के ब्रिटेन का राजनीतिक माहौल ही ऐसा था कि युद्ध से बचने के लिए अदा की गई हर कीमत बहुत कम लग रही थी। लेकिन बेहद दूरदर्शी राजनेता के रूप में विपक्षी चर्चिल ने संसद में कहा था, “महोदय! आपको म्यूनिख में बेइज्जती और युद्ध में चुनाव का मौका मिला था। आपने बेइज्जती का चुनाव किया है। लेकिन आप युद्ध से नहीं बच पाएंगे।” इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि प्रधानमंत्री से ज्यादा सटीकता का आकलन विपक्षी नेता ने किया था। इसी चर्चिल ने बाद में हिटलर के हर मंसूबे पर पानी फेर दिया था।

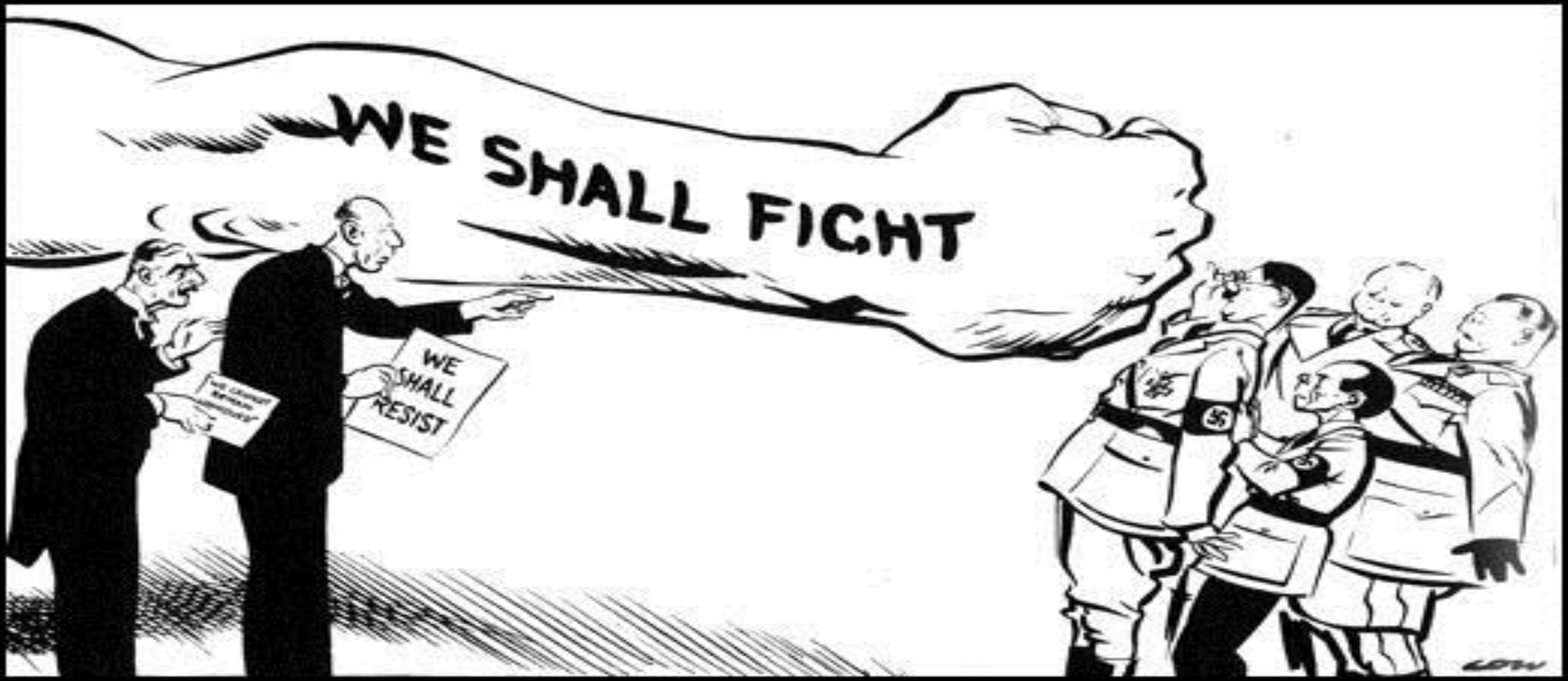

हिटलर द्वारा पोलैंड पर आक्रमण के बाद ब्रिटेन को अपनी नीति की कमजोरी का पता चला और और उसे युद्ध के लिए हर हाल में तैयार होना पड़ा।

SUGGESTED READINGS:

- 1. F.LEE BENNS — EUROPE SINCE 1914
- 2. A.J.P. TAYLOR — ORIGINS OF THE SECOND WORLD WAR
- 3. E.M.BARNS — WESTERN CIVILIZATION (VOL-III)
- 4. E.H. CARR — INTERNATIONAL RELATIONS BETWEEN THE WORLD WARS-1919-1939
- 5. NORMAN LOWE — MASTERING MODERN WORLD HISTORY
- 6. G.M.S. HARDY — SHORT HISTORY OF INTERNATIONAL AFFAIRS 1920-1939
- 7. S.N. DHAR — INTERNATIONAL RELATIONS & WORLD POLITICS SINCE 19119
- 8. PARTHA SARTHI GUPTA — EUROPE KA ITIHAS, BHAG-II
- 9. LAL BAHADUR VERMA — EUROPE KA ITIHAS, BHAG-II
- 10. DEVENDRA SINGH CHAUHAN — SAMKALEEN EUROPE, BHAG-II
- 11. C. WOODROFF — MODERN WORLD
- 12. M. MARRIOT — INTERNATIONAL RELATIONS BETWEEN THE TWO WORLD WARS